बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय शिक्षण आगे बढ़ने का तरीक़ा है

निकेत सागर

कोविड-19 ने हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों, संस्थाओं की कार्य पद्धतियों और पूरे देश तथा विश्व में सेवा-वितरण की प्रक्रियाओं के हर पहलू को प्रभावित किया है। वर्तमान में बच्चों के लिए स्कूल बन्द हैं, हालाँकि कुछ राज्य पुनः स्कूल खोलने की तरफ़ बढ़ रहे हैं, भले ही *कोविड-19* की दूसरी लहर के बाद अभी भी कुछ अनिश्चितता है। इन 18 महीनों में, राज्य सरकारों ने विभिन्न ऑनलाइन और मास-मीडिया मंचों का अधिक-से-अधिक उपयोग करके शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं को सुगम बनाने के लिए स्थिति-अनुकूल तरीक़े आज़माए। हालाँकि शिक्षकों ने ग्रामीण भारत के उन इलाक़ों के सरकारी स्कूलों में भी शिक्षण के इन तरीक़ों को लागू करने की पूरी कोशिश की, जहाँ क्षेत्रीय व भौगोलिक असमानताएँ हैं, संसाधनों तक पहुँच नहीं है व उनकी अनुपलब्धता है और एक बड़ा डिजिटल विभाजन है, फिर भी इसमें कई समस्याएँ रहीं। वर्चुअल (आभासी) और ऑनलाइन सीखने की सीमाओं के इस मुद्दे को दुनिया भर के कई अध्ययनों द्वारा अच्छी तरह दर्ज किया गया है।

हमने कुछ ऐसे प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की है, जिनके बारे में स्कूलों के दोबारा खुलने पर अपने आगामी कार्यों में गहराई से सोचने की ज़रूरत है। निर्धारित सत्रों और कार्यशालाओं के माध्यम से, सभी भागीदारों के साथ इनके बारे में चर्चा की गई है। इन भागीदारों में शिक्षक, प्रधान शिक्षक और माता-पिता शामिल हैं। शिक्षकों ने आगामी चुनौतियों के बारे में अपनी प्रारम्भिक समझ, उन्हें कम करने की योजनाओं और कार्यनीतियों को साझा किया है। उनके शब्दों में, बच्चों के स्कूली जीवन में आई यह रिक्तता बच्चों के समग्र सीखने पर दीर्घकालिक प्रभाव डालेगी। स्कूल बन्द होने से कक्षा में शिक्षकों और बच्चों के बीच होने वाली पारस्परिक क्रिया तो सीमित हुई ही है, इसने शिक्षकों को प्रभावी अभ्यास से भी दूर कर दिया है।

आगे इन समस्याओं पर चर्चा की गई है। मैं यहाँ इस बात पर प्रकाश डाल रहा हूँ कि कैसे हम सभी स्कूलों को फिर से खोलने की कल्पना और बेहतर शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं की तैयारी कर रहे हैं। हम विचार-विमर्श कर रहे हैं कि क्या किया जा सकता है, वर्तमान सन्दर्भ में हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं और सीखने की खाई को पाटने एवं दोबारा सामान्य तरीक़े से स्कूलों को चलाने के अपने लक्ष्य को पाने के लिए क्या योजना बना सकते हैं।

बच्चे और बर्बाद हुआ वक़्त

एक बच्चे के लिए, इस तथाकथित 'नए सामान्य' (न्यू नॉर्मल) ने उसके जीवन के हर पहलू पर आक्रमण किया है — स्कूल नहीं, परीक्षा नहीं और अब स्कूलों के खुलने का लम्बा इन्तज़ार। इन डेढ़ वर्षों में, मुख्य रूप से समाजीकरण के सीमित अवसरों के कारण बच्चों ने कई स्तरों पर (मनोवैज्ञानिक स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक) भुगता है। उनकी दैनिक जीवनशैली, दिनचर्या और समग्र सामाजिक व्यवहार में बड़े बदलाव हुए हैं। हमारे ज़िले (बाँसवाड़ा) में, अधिकांश निवासी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। सामान्य ग्रामीण जीवन में स्वास्थ्य और स्वच्छता सम्बन्धी पहलुओं पर अचानक ज़ोर दिए जाने के कारण भय और चिन्ता पैदा हो गई है।

शिक्षकों ने समुदाय में बच्चों के साथ अपनी दिन-प्रतिदिन की बातचीत में इन सभी कारकों को दर्ज किया है। शिक्षकों में से एक धर्मिष्ठा पण्ड्या कहती हैं, "जब स्कूल खुलेंगे, तो शिक्षकों को सबसे पहला क़दम अपने बच्चों की ज़रूरतों को समझने की दिशा में उठाना चाहिए। ये ज़रूरतें केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें जीवन के अनुभवों, भावनाओं और असुरक्षा से जुड़ी ज़रूरतें शामिल हैं।" वे आगे बताती हैं कि सबसे पहले, उन्होंने बच्चों के साथ उनके दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के बारे में बातचीत करना शुरू कर दिया है। स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा बताई हुई बातों पर ध्यान देना शुरू किया है जैसे कि वे क्या पसन्द करते हैं या नापसन्द करते हैं, किस तरह से किसी चीज़ से जुड़ते हैं और कितने समय तक किसी उद्देश्यपूर्ण जुड़ाव पर ध्यान देने में सक्षम हैं। जब बच्चे शिक्षक द्वारा दिखाए गए निरन्तर अपनत्व और जुड़ाव के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं, तो वे धीरे-धीरे खुलते जाते हैं, स्कूल की गतिविधियों और शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं में भाग लेने लगते हैं। इस तरीक़े ने बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को भी समझने में मदद की। सुविचारित खेलों, गतिविधियों

और अभ्यासों के माध्यम से सुश्री पण्ड्या प्रारम्भिक गणित और भाषा में बच्चों के सीखने के स्तरों पर ध्यान दे रही हैं। समझ का यह स्तर और प्रत्येक बच्चे के विवरण को व्यवस्थित रूप से रखना उनके कक्षा के कार्यों और शिक्षण में सहायक होगा और उसे पूरा करेगा। इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि उनकी कक्षा के बच्चे अधिक प्रभावी ढंग से सीखेंगे।

शिक्षकों का अभ्यास और क्षमता निर्माण

वास्तविकता में कक्षा में आमने-सामने बैठकर होने वाले संवाद व शिक्षण-शिक्षार्जन के अभ्यासों से हटकर वर्चुअल मोड (आभासी रूप) में विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव, मोहल्ला/सामुदायिक कक्षाएँ, घर-घर जाकर शिक्षण और कई अन्य प्रासंगिक और अनुकूलित तरीक़ों पर जाना सीखने का एक अनुभव रहा है। शिक्षकों ने अपने स्वयं के या राज्य द्वारा संचालित कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ने के लिए विभिन्न तरीक़े और कार्यनीतियाँ आज़माई हैं। उनके लिए, सामान्य कक्षा शिक्षण में वापस आने के लिए अधिक सुनियोजित तरीक़ों के साथ ही कार्यपद्धतियों को बदलने की भी आवश्यकता होगी। इस पर प्रकाश डालते हुए गवर्नमेंट अपर प्राइमरी स्कूल (जीयूपीएस), मेडिया, ढिंढोरे के एक शिक्षक विजय प्रकाश जैन कहते हैं, "शिक्षकों के रूप में, हमारे लिए विभिन्न अकादमिक और शैक्षणिक तरीक़ों के हिसाब से ढलने के लिए ख़ुद को तैयार करना आवश्यक है।" वे प्रारम्भिक कक्षाओं को भाषा पढ़ाते हैं। तालाबन्दी के दौरान वे अपने स्कूल के 50 बच्चों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उनके अनुभव के अनुसार, कोई अपने आप को अपने विषयों तक ही सीमित नहीं रख सकता। वास्तविक कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में अधिक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। भाषा पर काम करते हुए उन्होंने अपने बच्चों के संख्या ज्ञान सम्बन्धी योग्यताओं और कौशलों को भी समझा है और उसी के अनुसार वे दैनिक शिक्षण की योजना बनाते हैं। इसके अलावा, चूँकि बच्चों को कक्षा उन्नत किया गया है, तो दोबारा स्कूल खुलने पर कक्षा में बड़ी चुनौतियाँ इन्तज़ार कर रही हैं। वे पाँचवीं कक्षा की छात्रा सोनिया का उदाहरण देते हैं, "जब यह महामारी फैली थी तब वह तीसरी कक्षा में थी और अब पाँचवीं में है। मैं दोनों विषयों में उसके सीखने का स्तर जानता हूँ। मुझे उसके आवश्यक कौशलों पर काम करना होगा और सीखने के कक्षा-उपयुक्त प्रतिफलों को प्राप्त करने में उसकी मदद करनी होगी।"

ऐसा करने के लिए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर की गहन समझ की ज़रूरत होगी। अधिक एकीकृत दृष्टिकोण के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं को तैयार करने और उनकी योजना बनाने की आवश्यकता होगी, ताकि प्रभावी कार्य हो सके, उदाहरण के लिए, सोनिया के सीखने के नुक़सान पर। कक्षाओं में अब ऐसे समूह होंगे जो सीखने के विभिन्न स्तरों पर होंगे, इसलिए एक शिक्षक के रूप में उन्हें बहु-कक्षा बहु-स्तरीय (मल्टी-ग्रेड मल्टी-लेवल/ एमजीएमएल) शिक्षण को अपनाना होगा। हममें से कई लोगों के पास एमजीएमएल शिक्षण की समझ होने के लिए ज़रूरी अभ्यास में कमी है, इसलिए इस मोर्चे पर शिक्षकों के क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। इस तरह के प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ हमें अपने पिछले अभ्यास और अनुभवों से सीख लेकर नई क्षमताओं का निर्माण करने में मदद करेंगी जो आने वाले समय में हमारे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त होंगी।

सामान्य जीवन की ओर वापसी

भले ही बच्चों के लिए स्कूल बन्द हैं, लेकिन हमारे शिक्षक हमेशा की तरह अपने-अपने स्कूलों में आ रहे हैं। यह स्थिति तालाबन्दी से पहले की स्थिति से बिल्कुल अलग है, जब उत्साह का माहौल था, कक्षाओं में नियमित होने वाला मेलजोल व संवाद था और बच्चों के साथ जुड़कर काम होता था। अब वापस सामान्य तरीक़े से काम करने में स्वास्थ्य और स्वच्छता सम्बन्धी जागरूकता व अभ्यास को स्कूल के अन्दर और बाहर, दोनों जगह सुनिश्चित करने के नए तत्व होंगे। *कोविड-19* की इस पूरी स्थिति के दौरान पूरा समुदाय, स्कूल प्रशासन और शिक्षकों के साथ मिलकर काम करता रहा है, जिन्होंने विभिन्न भूमिकाएँ निभाईं और राज्य सरकारों द्वारा सौंपे गए अपने कर्तव्यों को पूरा किया। एक बार जब स्कूल फिर से खुल जाएँगे, तो कक्षा शिक्षण, प्रबन्धन और शिक्षकों व प्रशासन की कार्यपद्धति में बदलाव आएगा। बाँसवाड़ा, तलवाड़ा, अरथुना, गढ़ी, छोटी सरवन और बागीदौरा ब्लॉक के 80 प्रधान शिक्षकों के साथ हमने तीन दिवसीय योजनाबद्ध कार्यशालाएँ कीं। इनमें से दो कार्यशालाओं में हमने वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा की और उनको समझने की कोशिश की। साथ ही इस बारे में योजना बनाने की भी कोशिश की, कि किस प्रकार प्रधान शिक्षक पहचानी गई ज़रूरतों और लक्ष्यों पर काम करेंगे ताकि बच्चों के बेहतर ढंग से सीखने और शिक्षकों द्वारा शिक्षण के बेहतर तरीक़े अपनाने को सुनिश्चित किया जा सके। प्रतिभागियों ने समुदाय के स्तर पर वर्तमान स्थिति को समझने की तात्कालिक आवश्यकता पर प्रकाश डाला और समुदाय की ज़रूरतों और चुनौतियों के प्रति व्यवस्थित कार्य के महत्त्व पर ज़ोर दिया। समुदाय के प्रति समझ और संवेदनशीलता बच्चों की स्कूल में नियमितता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और बच्चों का स्कूल छोड़ना (ड्रॉपआउट) रोकेगी। सीधे शैक्षिक प्रक्रियाओं के साथ आगे बढ़ने की बजाय, स्कूलों को ऐसे सहानुभूतिपूर्ण वातावरण बनाने पर काम करना होगा जो प्रत्येक बच्चे का स्वागत करे व उसे स्थान दे। जो इस वास्तविकता को समझे कि बच्चे

स्कूल की दैनिक दिनचर्या से दूर रहे हैं और सम्भव है कि कई बच्चों ने भावनात्मक और वित्तीय आघातों का सामना किया होगा। इसलिए, सीखने के नुक़सान की भरपाई करने के लिए सबसे पहले बच्चों का आकलन करके उनके सीखने में आई दरारों की पहचान करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें विभिन्न विषयों में उनके बुनियादी कौशलों को समझने के बारे में बारीक़ी से सोचने की ज़रूरत है। प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों और सीखने के स्तरों को समझना महत्त्वपूर्ण है ताकि उन्हें सर्वोत्तम समर्थन और मार्गदर्शन (उपचारात्मक कार्य/ सेतु पाठ्यक्रम) प्रदान किया जा सके। इसलिए हमारी योजना है इन दो महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों की पहचान कर उन्हें हासिल करने की दिशा में काम करना — पहला, बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करना और दूसरा, प्रभावी शिक्षण पद्धतियों को सुगम बनाना।

* सुरक्षा की दृष्टि से बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

निकेत सागर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में फ़ेलो के रूप में शामिल हुए और अब वे बाँसवाड़ा, राजस्थान में एक स्रोत व्यक्ति के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क, दिल्ली विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। इससे पहले उन्होंने एआईएफ के लर्निंग एंड माइग्रेशन प्रोग्राम (एलएएमपी) के तहत पश्चिमी ओडिशा के ज़िलों की व्यथित प्रवासी आबादी के साथ काम करने वाले संगठन, लोकदृष्टि के साथ एआईएफ-क्लिंटन फ़ेलो के रूप में कार्य किया। उनकी रूचि के क्षेत्र हैं जातीय और लैंगिक विमर्श, आदिवासी समुदायों में शिक्षा का सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ, हाशियाकृत समुदायों की पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ। उनसे niket.sagar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : अनुज उपाध्याय